Translation Samvaad, Volume 2, Issue 1, April 2025
ISSN: 3049-4494

स्त्री-पुरुष संबंधों में आग की तलाश

बलजीत सिंह रैना पंजाबी और हिंदी के प्रतिष्ठित कथाकार हैं। इनके अनुभव क्षेत्र का दायरा काफी विस्तृत है। इन्होंने विविध विषयों पर कहानियां लिखी हैं किंतु स्त्री-पुरुष संबंधों पर केंद्रित इनकी कुछ कहानियां अपने विद्रोही तेवर के कारण बहुत चर्चित और विवादित रही हैं। इन कहानियों में स्त्री-पुरुष के रिश्ते को सामाजिक नैतिकता के बर-अक्स प्राकृतिक नियमों को रखकर देखा गया है और सामाजिक नियमों की प्रासंगिकता पर बहुत तार्किक बहस की गई है। ये कहानियां हिंदी में स्त्री-विमर्श के विकास के दौर में लिखी गई हैं इस कारण से इनका खास महत्व है। हालांकि ऐसा नहीं है कि इनकी सारी कहानियां सामाजिक नियमों से विद्रोह ही करती हैं, बल्कि कुछ कहानियां तो पुरुषवादी समाज की पारंपरिक नैतिकताओं के पक्ष में खड़ी दिखाई देती हैं। इसलिये यह नहीं कहा जा सकता है कि बलजीत सिंह रैना ने अपना एक खास तरह का दृष्टिकोण अथवा दर्शन विकसित कर लिया और उसी को अपनी कहानियों में दुहराते रहे। उनकी कहानी के पात्र समाज से ही उठाये हुए हैं। हमारे समाज में ही प्रतिरोध और अंतर्विरोध है, नैतिकता है और उस नैतिकता के बावजूद बहुत कुछ 'अनैतिक' भी मौजूद है, और यही सब इनकी कहानियों में बहुत प्रभावी ढंग से व्यक्त हुआ है। बलजीत सिंह रैना की कहानियों के स्त्री-पुरुष बहुत ज़रूरी सवालों को हमारे सामने लाते हैं जो शायद स्त्री-विमर्श की मुखर और महत्वपूर्ण स्त्री लेखिकाओं से भी छूटता रहा है। उदाहरण के लिये आगे की कुछ पंक्तियां देखी जा सकती हैं- "पाप-पुण्य की बातें करने वाला यह समाज कब समझेगा कि औरत-मर्द का मिलन सामाजिक अमल बाद में है, परंतु प्राकृतिक अमल पहले है। सामाजिक अमल तो वह तब बना जब समाज का अस्तित्व उभरा। जो चीज़ समाज की अपेक्षा प्रकृति पर अधिक निर्भर करती है उसको सामाजिक कैद में बांधकर मैं नहीं समझता आदमी ने अपनी नस्ल को सुधार लिया है। बल्कि ऐसा करके उसने अपनी नस्ल को मानसिक और शारीरिक बीमारियों का पुतला बना दिया है." ('आग' कहानी से)

बलजीत सिंह रैना की 'आग' शीर्षक कहानी उनकी स्त्री-पुरुष संबंधों पर केंद्रित कहानियों के संदर्भ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी की नायिका प्रिया शारीरिक संबंधों को लेकर बेहद विद्रोही दृष्टिकोण रखती है। उसके अनुसार स्त्री-पुरुष के शारीरिक संबंध प्रकृति से निर्धारित होने चाहिए, न कि समाज से। प्रिया अपने फुफेरे भाई से प्रेम करती है और उसके साथ शारीरिक संबंध भी रखती है। लेखक इस कहानी में स्त्री-पुरुष संबंधों के संदर्भ में सामाजिक नैतिकता पर सुदीर्घ और सुचिंतित बहस प्रस्तुत करता है। वह लिखता है कि "नैतिक मूल्य थे ही कहां, जो टूट रहे हैं, जिनका विघटन हो रहा है? और जो नैतिक मूल्य हैं, क्या वह सचमुच नैतिक मूल्य हैं? जो मूल्य कुदरत के नियमों के बजाय दर्शन के नियमों में बंधे हुए हों और जिनका पालन कर पाना आदमी के बस में न होकर उसकी स्वाभाविक प्रवृतियों के बस में हो क्या वह नैतिक मूल्य कहला सकते हैं? ऐसे मूल्यों का मनुष्य को सहजता से नहीं बल्कि ज़बर्दस्ती पालन करना पड़ता है। एक ऐसी ज़बर्दस्ती जो नज़र नहीं आती, और अगर नज़र आ भी जाये तो पाप-पुण्य की प्रचलित सांस्कृतिक मान्यताओं में घुटकर रह जाती है।"

इस कहानी में लेखक ने बताना चाहा है कि स्त्री-पुरुष के संबंधों को जबरन सामाजिक नैतिकताओं से बांध देने के कारण व्यक्ति कई तरह की कुंठाओं, विकृतियों और बीमारियों का शिकार हो गया है। इसलिये सभी सामाजिक संबंधों के ऊपर वह स्त्री-पुरुष के प्राकृतिक संबंधों को रखता है और दोनों की आपसी सहमति को ही सबसे अहम नैतिकता मानता है। जहां असहमति है वहां अनैतिकता है, पाप है। प्रिया का स्पष्ट मानना है कि "(कोई रिश्ता) जायज़ होता है या नहीं, इसका फैसला तो कुदरत ही कर देती है। अगर नाजायज़ होता तो कुदरती तौर पर उस समय दोनों में नपुंसकता आ जानी चाहिये, मगर ऐसा होता नहीं।"

इस कहानी में यह ध्यान देने योग्य है कि एक तरफ लेखक प्राकृतिक नियमों की बात कहता है तो दूसरी तरफ सहमति को सबसे बड़ी नैतिकता मानता है। यह सहमति स्त्री के आत्मसम्मान से जुड़ा हुआ है। इसे अगर ठीक से नहीं समझा जाए तो पूरा दृष्टिकोण बिल्कुल अराजक प्रतीत होगा। इसी के साथ-साथ यौन शुचिता की बात भी की गई है जिसका पूरा भार स्त्रियों के ही कंधों पर टिका होता है। इसी शुचिता के कारण प्रति वर्ष जाने कितनी ही स्त्रियां मार दी जाती हैं या आत्महत्या कर लेती हैं। वास्तव में यह विचारणीय प्रश्न है कि यह कैसी नैतिकता है जिसकी छांह में मनुष्य का अस्तित्व ही संकटग्रस्त हो गया है!

इससे जोड़ते हुए 'मूल्य' शीर्षक कहानी की चर्चा की जा सकती है जिसे साइंस फिक्शन के अंदाज़ में लिखा गया है। इस कहानी में विज्ञान का चमत्कार कुछ इस प्रकार घटित होता है कि एक व्यक्ति के दादा जी और उसकी बेटी एक साथ बाईसवीं सदी में जन्म लेते हैं। दादाजी के जन्म का यह कमाल 'फर्टीलाइजूड ऐम्ब्रायो बैंक फार फ्युचर जैनरेशन' के कारण हो पाता है। परिस्थितियां ऐसी होती हैं कि पड़दादा विज्ञान सिंह और पड़पोती सुपरीना कौर का पालन-पोषण एक ही साथ होता है। सुपरीना बाईसवीं सदी की लड़की होने के कारण सदी के अनुरूप ही काफी तेज़-तर्रार और बीसवीं सदी के मूल्यों तथा नैतिकताओं को मज़ाक समझने वाली होती है, जबकि विज्ञान सिंह सीधे-सादे, शर्मीले और बीसवीं सदी के मूल्यों में विश्वास रखने वाले होते हैं। इस कहानी में भी पड़दादा और पड़पोती के मध्य शारीरिक संबंध दिखाकर लेखक ने यह स्पष्ट करना चाहा है कि शरीर की भूख आदिम भूख है और यह अंततः सभी सामाजिक नैतिकताओं और मूल्यों से परे है। समाज में अगर मूल्यों की घेराबंदी है तो उसका अतिक्रमण भी है। दूसरी ओर बाईसवीं सदी के बहाने लेखक ने उस सदी के मूल्यों की भी कल्पना की है जहां बीसवीं इक्कीसवीं सदी के मूल्य (स्त्री-पुरुष संबंधों के संदर्भ में) किसी मतलब के नहीं रह गये हैं। विज्ञान सिंह जब रिश्ते की दुहाई देते हुए शारीरिक संबंध से इंकार कर देता है तो सुपरीना गुस्से से कहती है, "तुम क्या समझते हो, तुम्हारे जैसे दकियानूसी विचारों वाले मनुष्य को मैं पसंद करती हूं? कभी भी नहीं। यह सब तो मैं एक थ्रिल्ल के लिये करना चाहती हूं... केवल मन की इतनी-सी तसल्ली के लिये कि मैंने बाईसवीं सदी में जन्म लेने के बावजूद बीसवीं शताब्दी के एक मनुष्य को भोगा है।"

और जब सुपरीना अपने पड़दादा विज्ञान सिंह के साथ शारीरिक संबंध बनाने में कामयाब हो जाती है तो वह बताती है कि इसके लिये उसके मन में कोई अपराध-बोध नहीं है और ऐसा उसके बाईसवीं सदी के मूल्यों की वजह से है, जबकि विज्ञान सिंह पर अपराध-बोध का बोझ कई गुना बढ़ जाता है। इस कहानी में भी कथाकार स्त्री-पुरुष संबंधों के मध्य प्राकृतिक नियमों को एक अलग कोण से पुष्ट करने का प्रयास करता है और इसी के साथ-साथ वह बाईसवीं सदी के संबंधों की कल्पना भी करता है।

इससे जोड़ते हुए अगली कहानी 'नैन्सी डार्लिंग' की चर्चा करना ठीक रहेगा जिसमें एक खुले विचारों वाली लड़की शारीरिक सुख के मामले में उपर्युक्त पात्रों की भांति ही दृष्टिकोण रखती है। इस कहानी की नैन्सी खुले विचारों की ऐंग्लो इंडियन लड़की है जबकि उसका प्रेमी सामान्य परंपरागत विचारों वाला है जो विवाह से पूर्व शारीरिक संबंध को अनुचित मानता है। इस कहानी की नायिका नैन्सी के विचार सुपरीना से कम विद्रोही नहीं हैं। नैन्सी कहती है- "मनुष्य के जीवन में दो मुख्य पल आते हैं, जीत! एक तो तब जब वह किसी एक को चाहने लगता है, और दूसरा तब जब वह चाहत को एक भूख से अधिक कुछ भी नहीं समझता और हर रोज़ बदल-बदल कर नए-नए पकवान खाना पसंद करता है। तुम अभी प्रथम अवस्था में हो शायद ! तुम मेरी अवस्था तक पहुंच सकते हो परंतु मैं तुम्हारी अवस्था तक नहीं लौट सकती।"

'कैनवास कोरा नहीं' की सरला अमीर पिता की इकलौती संतान है। उसका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं है। इस अतृप्ति के कारण वह एक गरीब पहाड़ी मज़दूर के शारीरिक आकर्षण में बंधती चली जाती है। इसी प्रकार 'जायज़-नाजायज़' का सीटू अपने मामा की बेटी से प्यार करता है और सोचता है कि "कितना अच्छा होता अगर हम भी मुसलमान होते।"

इन कहानियों के माध्यम से बलजीत सिंह रैना समाज में व्याप्त ऐसी प्रवृतियों को समझने का प्रयास करते हैं जिनसे समाज में नैतिक नियमों के बावजूद ऐसे संबंध कायम होते हैं किंतु नैतिक बंधनों की वजह से उनके परिणाम बहुत घातक होते हैं। ऐसी स्थितियों में ज्यादातर तो स्त्रियों का शोषण होता रहता है और वह चुपचाप सहती रहती है। दूसरा परिणाम सामूहिक निर्णय के द्वारा हत्या के रूप में सामने आता है और तीसरा परिणाम आत्महत्या के रूप में। इसके अलावा इस तरह की स्थितियों में व्यक्ति कई तरह की विकृतियों का भी शिकार हो जाता है। जब परिणाम इतने भयावह हों तो उन नैतिकताओं पर विचार करने की तो ज़रूरत है ही।

इसके बाद दो कहानियों की एक साथ चर्चा अपेक्षित है जिसमें अलग-अलग स्त्री और पुरुष केवल संतान प्राप्ति की कामना से विवाहेतर संबंध कायम करते हैं। ऐसी कहानियों में नैतिकता और दीनता एक साथ घुल-मिल जाती है। 'ट्रैजुडी क्वीन' कहानी की गगन शादी के बाद भी मां नहीं बन पाती तो अपने से बहुत कम उम्र के लड़के बसर की ओर आकर्षित हो जाती है। उसने अपने प्रेमी का प्यार पाने के लिये उससे शादी की किंतु उसका प्यार हासिल नहीं हुआ। अपने जीवन की रिक्तता को वह संतान से भरना चाहती है और इसके लिये वह बहुत कातर हो जाती है। दूसरी तरफ 'ढलान' कहानी का फौजी अफसर इस बात से कुंठित है कि शादी के चार साल बाद भी उसकी कोई संतान नहीं है, जबकि उसके जीवन का सबसे बड़ा सपना पिता बनने का है। वह एक गरीब पहाड़न स्त्री लाजो से इसी उद्देश्य से संबंध कायम करता है और उसके पालन-पोषण का सारा भार अपने जिम्मे ले लेता है। लाजो की एक नन्हीं-सी बेटी चंदा भी उसके साथ रहती है जो साहब की मेहरबानी से दूर के किसी बोर्डिंग स्कूल में पढ़ने लगती है। लाजो साहब को भगवान से कुछ कम नहीं मानती जो उससे इतना प्रेम करता है और उसकी बेटी को भी अपनी बेटी की तरह मानता है। एक बार लाजो की मां बनने की उम्मीद भी बंधी थी और तब साहब की खुशी का कुछ ठिकाना न रहा था, "लाजो, अब मुझे लोग गलत नहीं समझेंगे। मैं उनको बताऊंगा कि मैं भी बाप बनने के काबिल हूं..." किंतु तीसरे ही महीने लाजो का गर्भपात हो गया और साहब फिर से बाप बनने से वंचित रह गये। लाजो के पैर के नीचे से उस वक्त ज़मीन खिसक जाती है जब उसकी बेटी चंदा बहुत कम ही उम्र में मां बन जाती है और मरते-मरते बता देती है कि उसके बच्चे का पिता कौन है। लाजो क्षणभर में ही साहब के प्रति तीव्र घृणा से भर जाती है और उस बच्चे को ढलान से नीचे फेंक कर साहब से बदला लेती है तथा उसे फिर से पिता बनने के सुख से वंचित कर देती है। इस कहानी का नायक पिता बनने के अपने सपने को पूरा करने के लिये उपर्युक्त कहानी की नायिका की भांति किसी भी हद तक गिरने को तैयार हो जाता है। यहां तक कि जिस बच्ची को वह अपनी बेटी की तरह पाल रहा था उससे भी वह पिता बनने की साध पूरी करने को तैयार हो जाता है। यह स्त्री-पुरुष संबंध का एक नया कोण है जिसे उपर्युक्त दोनों कहानियों में कथाकार सामने लाता है। संतान का न होना स्त्री और पुरुष दोनों को सालता है किंतु दोनों की कचोट अलग-अलग तरह की है। स्त्री संतान से अपने जीवन का सूनापन भरना चाहती है तो पुरुष उसके जरिये अपने पुरुषार्थ को सिद्ध करना चाहता है।

इसके अलावा बलजीत सिंह रैना स्त्री-पुरुष के कुछ अन्य तरह के संबंधों को भी अपनी कहानियों का विषय बनाते हैं। एक तरफ जहां वे स्त्री-पुरुष संबंधों को प्राकृतिक नियमों के तहत देखने का आग्रह करते हैं वहीं दूसरी ओर परंपरागत नैतिक नियमों का भी प्रबल आग्रह है। 'सागर, सुनामी और सोफिया' में एक पति इसलिये अत्यधिक तनाव में है क्योंकि उसकी पत्नी किसी अन्य पुरुष की ओर आकर्षित हो जाती है। दूसरी ओर एक ऐसा पति भी है जो अपनी पत्नी के किसी अन्य पुरुष के साथ बने संबंध को जानकर भी उसे छोड़ना नहीं चाहता किंतु उस संबंध के कारण पत्नी अपराधबोध से भर जाती है और अपने पति से तलाक ले लेती है। इस कहानी में रैना यह बताना चाहते हैं कि हरेक शारीरिक संबंध का मतलब प्रेम नहीं होता है। सोफिया कैप्टन से कहती है, "मुझे वे प्रेमी नहीं लगते। तुम क्या समझते हो, मेरे मुखिया हावर्ड और मेरे बीच प्रेम था? न, बस एक आकर्षण था, अनुकूल स्थितियां थीं और कुछ अंतरंग पल थे... इसलिये शारीरिक संबंध बन गये। यह प्रेम नहीं था। प्रेम तो मैं अपने पति से करती थी, आज भी करती हूं। इसीलिये तो बेवफाई करके उसके साथ नहीं रह पाई।"

उल्लेखनीय है कि इस कहानी में विवाहेतर संबंध को बेवफाई या बेइमानी माना जा रहा है और यहां प्राकृतिक नियमों की अवधारणा सिरे से गायब है. जबकि 'आग' कहानी की नायिका प्रिया का यह आलम है कि "तीनों बच्चे नानी के घर में हैं, पति दुबई में हैं और मैं तीर्थ यात्रा के बहाने यहां मनीष

के पास!" और ऐसी स्थिति में भी प्रिया को नहीं लगता कि वह किसी से बेवफाई कर रही है। अगर इसकी पृष्ठभूमि में जायें तो प्रिया का यह पक्ष देख सकते हैं कि उसके पति का भी एक विधवा स्त्री से शारीरिक संबंध है और इसकी जानकारी प्रिया को भी है। हालांकि प्रिया की इस निर्द्वद्वता के पीछे उसके पति का चरित्र नहीं है क्योंकि वह उससे कुपित नहीं है या उसने प्रतिशोध के तहत किसी अन्य पुरुष से शारीरिक संबंध नहीं बनाया है। प्रिया का जीवन दर्शन ही उसे ऐसे संबंधों की प्रेरणा देता है। इसी संदर्भमें 'ग्लोबल गांव के निवासी' शीर्षक कहानी को रखा जा सकता है जिसमें पति-पत्नी के दूसरों से संबंध हैं फिर भी वे साथ-साथ रहते हैं और एक-दूसरे का सम्मान करते हैं। ऐसी ही एक कहानी है 'पत्र-मित्र' जिसमें पति कई लड़कियों को पत्र लिखा करता है और पत्र के जरिये ही उनसे रोमांस करता है। पत्नी यह समझकर चुप रहती है कि पत्र से क्या आता-जाता है। किंतु उसे तब ठेस पहुंचती है जब पता चलता है कि उसका पति पत्र लिखने वाली एक लड़की से मुलाकात भी कर चुका है। दूसरी ओर पत्नी अपने पति की सुरक्षा को लेकर भी उन लड़कियों की ओर से आशंकित रहती है। इसी क्रम में 'पुनः सृजणा' कहानी उल्लेखनीय है जिसकी नायिका देवी अपने पति के अत्याचारों के कारण शारीरिक और मानसिक रूप से बुरी तरह अस्वस्थ हो जाती है। जो डाक्टर उसकी मानसिक चिकित्सा करता है और उसे जीने का हौसला देता है, स्वस्थ होने पर देवी उसी डाक्टर पर आसक्त हो जाती है। किंतु इस कहानी में देवी को जो समाधान सुझाया गया है वह बिल्कुल परंपरागत समाधान है जहां प्राकृतिक नियमों की बात पूरी तरह भुला दी गई है। डाक्टर देवी को फिर से उसी अत्याचारी पति के पास जाने, उसे अपनाने और उसे अपने प्यार से बदलने की सलाह देता है। यहां यह बात समझ से परे है कि जो इन्सान इस कदर वहशी है उसे अचानक केवल अकेले के प्रयास से कैसे बदला जा सकता है। इस कहानी में कथाकार की विद्रोही अवधारणा वास्तव में चौंकाती है। डाक्टर उसे अकेले दम पर जीने और अपने पैरों पर खड़ा होने की भी सलाह दे सकता था, बनिस्बत अपने क्रूर और संवेदनहीन पति के पास लौटने के।

बहरहाल, स्त्री-पुरुष के संबंधों की जटिलता इतनी ही कहानियों में नहीं सिमट सकती। इसके अनेक पहलू होते हैं और हरेक पहलू को देखने के अलग-अलग कोण और दृष्टिकोण हो सकते हैं। 'महानता' शीर्षक कहानी की नायिका अपने कथित प्रेमी को इसलिये छोड़ देती है क्योंकि उसे उसके नपुंसक होने का अंदेशा होता है। यह अंदेशा उसे जिस कारण से होता है वह एक अलग तरह की सोच को सामने लाता है। बहुत ही अंतरंग क्षणों में प्रेमिका अपने प्रेमी को शारीरिक संबंध बनाने से मना करती है और वह मान जाता है। इसी एक बात पर उसने मान लिया कि लड़के में पुंसत्व की कमी है अन्यथा पुरुष तो सदैव स्त्री को जबरन हासिल करने की कोशिश करता है। यह सोच कितना व्यापक है और उसका परिणाम कितने तरह का हो सकता है यह सोचने को यह कहानी विवश करती है। 'अंतर' कहानी की रमिया अपनी विवशता और न्यूनता में ही महान दिखाई देती है। वह गरीबी से तंग आकर ईसाई धर्म स्वीकार कर लेती है ताकि उसके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा और पालन-पोषण हो सके। दूसरी ओर पति के होते हुए भी वह चर्च के फादर से संबंध बनाये रखने को लाचार होती है ताकि परिवार के गुज़र-बसर के लिये कुछ आर्थिक मदद मिलती रहे। रमिया पहले खाते-पीते घर की बहू थी लेकिन किसी के प्रेम में पड़कर वह उसके साथ भाग आई और अब उसे गुज़र-बसर के लिये किसी और के साथ सोना पड़ रहा है। यह स्त्री-पुरुष संबंध का ही एक अलग पहलू है जिसे समाज में बहुतायत से देखा जा सकता है। रमिया कहती है, "जब मैं अपने पहले मर्द के साथ थी रे, उन दिनों जब कभी तुमरे मामा के संग चोरी-छुपे कुछ कर बैठती तो उस रात अपने मर्द के संग ज़रूर सोती थी। डरती थी, कहीं कुछ हो गया तो पकड़ी न जाऊं। उन दिनों अपने मर्द के संग तुमरे मामा के कारण सोना पड़ता था अब तुमरे मामा के संग अपने बच्चों के कारण सोना पड़ता है। तेरे मामा की कमाई पर ही रहती तो मेरे बच्चे भिखारी हो गये होते आज ।"

इस कहानी में देखा जा सकता है कि एक स्त्री कभी सुख के लिये पुरुष के साथ सोती है तो कभी अपनी और अपने परिवार की ज़रूरतें पूरी करने के लिये। अपने परिवार का पालन-पोषण कर पाने की सार्थकता का अहसास भी शारीरिक सुख से किसी तरह कमतर नहीं है इसीलिये उसे पराये पुरुष के साथ सोना अखरता नहीं है। 'आग' कहानी की प्रिया तो कहती भी है कि "शारीरिक सुख ही अगर सब कुछ होता तो दुनिया भर की वेश्याएं सबसे अधिक सुखी होतीं!" मज़बूरियां पुरुषों को भी नैतिक मूल्यों से च्युत करती हैं और स्त्रियों को भी। पुरुष च्युत होकर चोरी या हत्या जैसे या अन्य घृणित कर्म करता है तो स्त्री अपने जिस्म को साधन बनाती है। कुछ स्त्रियां अपने शरीर को बहुत चालाकी से भुनाती हैं तो कुछ दूसरों की चालाकी का शिकार हो जाती हैं। 'हिरोइन' कहानी की सोनिया अपनी अभिनेत्री बनने की चाह को अपने सौंदर्य के माध्यम से ही पूरा करती है किंतु अपना शरीर नहीं सौंपती। वह अंत तक शरीर का का लालच दिखाकर अपना लक्ष्य साध लेती है। दूसरी तरफ 'प्रतिभा' शीर्षक कहानी की प्रतिभा है जो अपने परिवार को चलाने के लिये अलग-अलग पुरुषों के साथ प्रेम का अभिनय तो करती है किंतु शादी नहीं करती क्योंकि उसके बाद वह परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह नहीं कर सकती है। 'पहाड़ी नाला' कहानी की पंद्रह वर्षीय मासूम-सी अनाथ लड़की को उसके रिश्तेदारों ने महज़ पांच हज़ार रुपयों में बेच दिया और वह ज़बरन वेश्या बना दी गई। उसका किसी पुरुष के साथ बनाया जाने वाला संबंध न प्राकृतिक अर्थों में कोई संबंध है और न ही सामाजिक-नैतिक अर्थों में। उसके इस संबंध को मज़बूरी के अलावा और कौन-सा नाम दिया जा सकता है और उसके लिये किस तरह की अवधारणा गढ़ी जा सकती है यह वास्तव में विचारणीय है।

अब अंत में एक कहानी का ज़िक्र करना मुझे आवश्यक लग रहा है, शीर्षक है 'पेड़ से टूटा पत्ता'। यह कहानी एक किन्नर पर है जिसे विषय बनाकर बहुत कम कहानियां लिखी गई हैं। किन्नरों का प्रसंग अक्सर फूहड़ता या हास्य के साथ आता है और उनके मन में पैठकर संवेदनशीलता के साथ बहुत कम लेखन किया गया है। बलजीत सिंह रैना की यह कहानी इस कमी को पूरा करने का एक प्रयास है जिसका स्वागत किया जाना चाहिये। इसमें एक किन्नर का जिक्र है जिसके पिता उसे बहुत प्यार से एक बेटी की तरह पालते हैं। वह जवान होती है तो एक लड़के से उसे प्यार हो जाता है और लड़का भी उसे बहुत चाहता है, उससे शादी करना चाहता है। एक दिन अंतरंग पलों में लड़के को उसके किन्नर होने का पता चल जाता है और उसका अचानक ही अपनी प्रेमिका से मोहभंग हो जाता है। अपने प्रेमी को खोने का उसे भी बेहद अफसोस होता है। फिर तो बात फैलती चली जाती है और पिता के लाख विरोध-प्रतिरोध के बावजूद किन्नरों का समूह उसे उठा ले जाता है। उसकी ज़िंदगी अचानक ही पूरी तरह नर्क हो जाती। इंतिहा तो तब होती है जब वह अपने समूह के साथ एक घर में नाचने-गाने के लिये जाती है जिस घर में पुत्र-जन्म की सूचना मिलती है, और उस शिशु का

पिता उसका पूर्व प्रेमी ही निकलता है। उसे नाच-गाकर उस युवक से बख्शीश मांगना पड़ता है जो कभी उसका प्रेमी था और उससे शादी करना चाहता था। यह संवेदना का चरम है जिसे केवल मर्म पर महसूस किया जा सकता है।

बलजीत सिंह रैना की कहानियों की भाषा कथावस्तु के अनुकूल और बेहद सरल होती है तथा शिल्प में भी ये अनावश्यक जटिलता नहीं लाते हैं। इस कारण से इनकी कहानियों की पठनीयता और उसका प्रवाह बना रहता है। इनकी कहानियों का कथानक आम जन-जीवन के बेहद करीब होने के कारण बहुत प्रभावी होता है। हालांकि ये जम्मू के रहने वाले हैं लेकिन इनकी कहानियों में पूरा हिंदुस्तान फैला हुआ है। स्त्री-पुरुष संबंधों को केंद्र में रखकर इतने कोण से बहुत कम कथाकारों ने विचार किया है। इस दृष्टि से बलजीत सिंह रैना एक प्रभावशाली और अलग शैली के कथाकार के रूप में हमारे सामने आते हैं जिन्हें अवश्य ही पढ़ा जाना चाहिये।

विपिन कुमार शर्मा

Punjabi Translation

ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿਚ ਔਰਤ ਮਰਦ ਦੇ ਸੰਬੰਧਾ ਦਾ ਅਧਿਐਨ

ਮੂਲ ਲੇਖਕ ਹਿੰਦੀ – ਡਾ. ਬਿਪਿਨ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ

ਅਨੁਵਾਦਕ ਪੰਜਾਬੀ - ਚਰਨਜੀਤ ਸਿੰਘ

ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਪੰਜਾਬੀ ਅਤੇ ਹਿੰਦੀ ਦੇ ਸ੍ਰੇਸ਼ਠ ਕਹਾਣੀਕਾਰ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਖੇਤਰ ਕਾਫ਼ੀ ਵਿਸ਼ਾਲ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਵਿਸ਼ਿਆਂ 'ਤੇ ਕਹਾਣੀਆਂ ਲਿਖੀਆਂ ਹਨ। ਪਰੰਤੂ, ਔਰਤ ਮਰਦ ਸੰਬੰਧਾਂ 'ਤੇ ਕੇਂਦਰਤ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਕੁਝ ਕਹਾਣੀਆਂ ਆਪਣੇ ਵਿਦ੍ਰੋਹੀ ਰੁਖ ਕਰਕੇ ਬਹੁਤ ਚਰਚਿਤ ਅਤੇ ਵਿਵਾਦਿਤ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਮਰਦ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨੂੰ ਸਮਾਜਿਕ ਨੈਤਿਕਤਾ ਦੇ ਅਕਸ ਕੁਦਰਤੀ ਨਿਯਮਾਂ ਦੇ ਪਰਿਪੇਖ ਵਿਚ ਵੇਖਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਨਿਯਮਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ ਤੇ ਕਾਫ਼ੀ ਤਰਕਸੰਗਤ ਚਰਚਾ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਇਹ ਕਹਾਣੀਆਂ ਹਿੰਦੀ ਵਿੱਚ ਔਰਤ-ਵਿਮਰਸ਼ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿੱਚ ਲਿਖੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ, ਇਸ ਕਰਕੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਖਾਸ ਮਹੱਤਵ ਹੈ। ਹਾਲਾਂਕਿ ਇਹ ਨਹੀਂ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਸਮਾਜਿਕ ਨਿਯਮਾਂ ਨਾਲ ਵਿਦ੍ਰੋਹ ਹੀ ਕਰਦੀਆ ਹਨ, ਬਲਕਿ ਕੁਝ ਕਹਾਣੀਆਂ ਤਾਂ ਮਰਦ-ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਦੀ ਪਰੰਪਰਾਗਤ ਨੈਤਿਕਤਾ ਦੇ ਪੱਖ ਵਿੱਚ ਖੜੀਆਂ ਦਿਸਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਇਹ ਨਹੀਂ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਕਿ ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਨੇ ਆਪਣਾ ਕੋਈ ਖਾਸ ਤਰੀਕੇ ਦਾ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟਿਕੋਣ ਜਾਂ ਦਰਸ਼ਨ ਵਿਕਸਤ ਕਰ ਲਿਆ ਅਤੇ ਹਰ ਵਾਰੀ ਆਪਣੇ ਕਥਾ ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਉਸੇ ਨੂੰ ਦੁਹਰਾਉਂਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੇ ਪਾਤਰ ਸਮਾਜ ਤੋਂ ਹੀ ਲਏ ਗਏ ਹਨ। ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਹੀ ਪ੍ਰਤੀਰੋਧ ਅਤੇ ਅੰਤਰਵਿਰੋਧ ਹੈ, ਨੈਤਿਕਤਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਨੈਤਿਕਤਾ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਕਾਫ਼ੀ ਕੁਝ ਅਨੈਤਿਕ ਵੀ ਮੌਜੂਦ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹੀ ਸਭ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਪ੍ਰਗਟ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੇ ਔਰਤ ਮਰਦ ਅਜਿਹੇ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਅਤੇ ਜ਼ਰੂਰੀ ਸਵਾਲਾਂ ਨੂੰ ਸਾਹਮਣੇ ਲਿਆਉਂਦੇ ਹਨ ਜੋ ਸ਼ਾਇਦ ਔਰਤ-ਵਿਮਰਸ਼ ਦੀਆਂ ਮੁੱਖ ਅਤੇ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਔਰਤ ਲੇਖਿਕਾਵਾਂ ਤੋਂ ਵੀ ਅਕਸਰ ਛੁੱਟ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਉਦਾਹਰਨ ਵਜੋਂ ਅੱਗੇ ਦਿੱਤੀਆਂ ਕੁਝ ਪੰਗਤੀਆਂ ਵੇਖੀਆਂ ਜਾ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ -

"ਪਾਪ-ਪੁੰਨ ਦੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਇਹ ਸਮਾਜ ਕਦੋਂ ਸਮਝੇਗਾ ਕਿ ਔਰਤ-ਮਰਦ ਦਾ ਮਿਲਨ ਸਮਾਜਿਕ ਅਮਲ ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਹੈ, ਪਰ ਕੁਦਰਤੀ ਅਮਲ ਪਹਿਲਾਂ ਹੈ। ਸਮਾਜਿਕ ਅਮਲ ਤਾਂ ਉਹ ਤਦੋਂ ਬਣਿਆ ਜਦੋਂ ਸਮਾਜ ਦਾ ਅਸਤਿਤਵ ਉਭਰਿਆ। ਜੋ ਚੀਜ਼ ਸਮਾਜ ਦੀ ਤੁਲਨਾ ਵਿੱਚ ਕੁਦਰਤ 'ਤੇ ਵੱਧ ਨਿਰਭਰ ਕਰਦੀ ਹੈ, ਉਸਨੂੰ ਸਮਾਜਿਕ ਕੈਦ ਵਿੱਚ ਬਣ ਕੇ ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਸਮਝਦਾ ਕਿ ਇਨਸਾਨ ਨੇ ਆਪਣੀ ਨਸਲ ਨੂੰ ਸੁਧਾਰ ਲਿਆ ਹੈ, ਬਲਕਿ ਅਜਿਹਾ ਕਰਕੇ ਉਸ ਨੇ ਆਪਣੀ ਨਸਲ ਨੂੰ ਮਾਨਸਿਕ ਅਤੇ ਸਰੀਰਕ ਬੀਮਾਰੀਆਂ ਦਾ ਪੁਤਲਾ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ ਹੈ।"

(ਕਹਾਣੀ "ਅੱਗ" 'ਚੋਂ)

ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਦੀ **'ਅੱਗ'** ਸਿਰਲੇਖ ਕਹਾਣੀ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਔਰਤ ਮਰਦ ਸੰਬੰਧਾਂ 'ਤੇ ਕੇਂਦਰਤ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਕਹਾਣੀ ਮੰਨੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਨਾਇਕਾ ਪ੍ਰਿਆ ਸਰੀਰਕ ਸੰਬੰਧਾਂ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਵਿਦ੍ਰੋਹੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟਿਕੋਣ ਰੱਖਦੀ ਹੈ। ਉਸ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ, ਔਰਤ ਮਰਦ ਦੇ ਸਰੀਰਕ ਸੰਬੰਧ

Translation Samvaad, Volume 2, Issue 1, April 2025
ISSN: 3049-4494

ਸਮਾਜ ਤੋਂ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਕੁਦਰਤ ਤੋਂ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਹੋਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਿਆ ਆਪਣੇ ਫੁਫੇਰੇ ਭਰਾ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਕਰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਨਾਲ ਸਰੀਰਕ ਸੰਬੰਧ ਵੀ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਲੇਖਕ ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਔਰਤ ਮਰਦ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿੱਚ ਸਮਾਜਿਕ ਨੈਤਿਕਤਾ ਤੇ ਇਕ ਲੰਬੀ ਅਤੇ ਸੋਚ-ਵਿਚਾਰ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਚਰਚਾ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਲਿਖਦਾ ਹੈ -

"ਨੈਤਿਕ ਮੁੱਲ ਹੈ ਹੀ ਕਿੱਥੇ ਸਨ ਜੋ ਟੁੱਟ ਰਹੇ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਵਿਘਟਨ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ ? ਅਤੇ ਜੋ ਨੈਤਿਕ ਮੁੱਲ ਹਨ, ਕੀ ਉਹ ਅਸਲ ਵਿਚ ਨੈਤਿਕ ਮੁੱਲ ਹਨ ? ਜੇਕਰ ਉਹ ਮੁੱਲ ਕੁਦਰਤ ਦੇ ਨਿਯਮਾਂ ਦੀ ਥਾਂ ਦਰਸ਼ਨ ਦੇ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿੱਚ ਬੱਧ ਹੋਣ ਅਤੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪਾਲਣਾ ਕਰਨਾ ਇਨਸਾਨ ਦੇ ਵੱਸ ਦੀ ਗੱਲ ਨਾ ਹੋ ਕੇ, ਉਸ ਦੀ ਕੁਦਰਤੀ ਪ੍ਰਵਿਰਤੀ ਦੇ ਵੱਸ ਵਿੱਚ ਹੋਵੇ, ਤਾਂ ਕੀ ਉਹ ਨੈਤਿਕ ਮੁੱਲ ਕਹਲਾਏ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ ? ਅਜਿਹੇ ਮੁੱਲਾਂ ਦੀ ਇਨਸਾਨ ਆਸਾਨੀ ਨਾਲ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਜ਼ਬਰਦਸਤੀ ਪਾਲਣਾ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇੱਕ ਅਜਿਹੀ ਜ਼ਬਰਦਸਤੀ ਜੋ ਦਿਸਦੀ ਨਹੀਂ, ਅਤੇ ਜੇਕਰ ਦਿਸ ਵੀ ਜਾਵੇ, ਤਾਂ ਪਾਪ-ਪੁੰਨ ਦੀ ਰਵਾਇਤੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਿਕ ਧਾਰਨਾਵਾਂ ਵਿਚ ਘੁੱਟ ਕੇ ਰਹਿ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।"

ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਲੇਖਕ ਇਹ ਦਰਸਾਉਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜਦੋਂ ਔਰਤ ਮਰਦ ਦੇ ਸੰਬੰਧਾਂ ਨੂੰ ਜ਼ਬਰਦਸਤੀ ਸਮਾਜਿਕ ਨੈਤਿਕਤਾਵਾਂ ਦੇ ਨਿਯਮਾਂ ਵਿੱਚ ਬਣ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਵਿਅਕਤੀ ਅਨੇਕ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਅਧੂਰੀਆਂ ਇਛਾਵਾਂ, ਮਨੋਵਿਕਾਰ ਅਤੇ ਬੀਮਾਰੀਆਂ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਲੇਖਕ ਸਾਰੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸੰਬੰਧਾਂ ਤੋਂ ਉੱਪਰ ਔਰਤ ਮਰਦ ਦੇ ਕੁਦਰਤੀ ਸੰਬੰਧਾਂ ਨੂੰ ਰੱਖਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਦੋਵਾਂ ਦੀ ਆਪਸੀ ਸਹਿਮਤੀ ਨੂੰ ਹੀ ਸਭ ਤੋਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਨੈਤਿਕਤਾ ਮੰਨਦਾ ਹੈ। ਜਿੱਥੇ ਅਸਹਿਮਤੀ ਹੈ, ਓਥੇ ਅਨੈਤਿਕਤਾ ਹੈ, ਪਾਪ ਹੈ। ਪ੍ਰਿਆ ਦਾ ਸਾਫ਼ ਮੰਨਣਾ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਰਿਸ਼ਤਾ ਜਾਇਜ਼ ਹੈ ਜਾਂ ਨਹੀਂ, ਇਹ ਫੈਸਲਾ ਤਾਂ ਕੁਦਰਤ ਹੀ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਉਹ ਨਾਜਾਇਜ਼ ਹੁੰਦਾ ਤਾਂ ਕੁਦਰਤੀ ਤੌਰ ਤੇ ਉਸ ਵੇਲੇ ਦੋਵਾਂ ਵਿੱਚ ਲਿੰਗ ਅਸਮਰਥਤਾ ਆ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਸੀ, ਪਰ ਐਸਾ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ।

ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਇਹ ਧਿਆਨ ਦੇਣ ਯੋਗ ਗੱਲ ਹੈ ਕਿ ਇਕ ਪਾਸੇ ਲੇਖਕ ਕੁਦਰਤੀ ਨਿਯਮਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਤੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਸਹਿਮਤੀ ਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਨੈਤਿਕਤਾ ਮੰਨਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਹਿਮਤੀ ਔਰਤ ਦੇ ਆਤਮ-ਸਨਮਾਨ ਨਾਲ ਜੁੜੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਇਸਨੂੰ ਠੀਕ ਢੰਗ ਨਾਲ ਨਾ ਸਮਝਿਆ ਜਾਵੇ, ਤਾਂ ਪੂਰਾ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟਿਕੋਣ ਬਿਲਕੁਲ ਗੈਰ ਵਾਜਬ ਲੱਗ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਯੌਨ ਸੰਯਮ (ਜਿਸ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਸਮਾਜਿਕ ਮਾਪਦੰਡ ਵਧੇਰੇ ਇਸਤ੍ਰੀਆਂ 'ਤੇ ਲਾਗੂ ਹੁੰਦੇ ਹਨ) ਦੀ ਵੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਇਸੇ ਸੰਯਮ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਕਰਕੇ ਹਰ ਸਾਲ ਕਿੰਨੀਆਂ ਹੀ ਇਸਤ੍ਰੀਆਂ ਮਾਰੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਜਾਂ ਆਤਮਹੱਤਿਆਵਾਂ ਕਰ ਲੈਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਦਰਅਸਲ ਇਹ ਵਿਚਾਰਣਯੋਗ ਸਵਾਲ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਕਿਹੋ ਜਿਹੀ ਨੈਤਿਕਤਾ ਹੈ ਜਿਸ ਦੀ ਛਾਂਹ ਹੇਠ ਇਨਸਾਨ ਦਾ ਅਸਤਿਤਵ ਹੀ ਖ਼ਤਰੇ 'ਚ ਪੈ ਗਿਆ ਹੈ।

ਇਸ ਨਾਲ ਜੋੜਦੇ ਹੋਏ **'ਮੂਲ'** ਸਿਰਲੇਖ ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਵੀ ਚਰਚਾ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ ਸਾਇੰਸ-ਫਿਕਸ਼ਨ ਦੇ ਅੰਦਾਜ਼ ਵਿੱਚ ਲਿਖਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਵਿਗਿਆਨ ਦਾ ਚਮਤਕਾਰ ਅਜਿਹਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇੱਕ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਦਾਦਾ ਜੀ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਧੀ ਦੋਵਾਂ ਦਾ ਜਨਮ ਇੱਕੋ ਸਮੇਂ 22ਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿੱਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਦਾਦਾ ਜੀ ਦੇ ਜਨਮ ਦਾ ਇਹ ਕਰਿਸ਼ਮਾ **'ਫਰਟੀਲਾਈਜ਼ਡ ਐਂਮਬਰਾਯੋ ਬੈਂਕ ਫਾਰ ਫਿਊਚਰ ਜਨਰੇਸ਼ਨ'** ਦੇ ਕਾਰਨ ਸੰਭਵ ਹੋ ਪਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਹਾਲਾਤ ਐਸੇ ਬਣਦੇ ਹਨ ਕਿ ਪੜਦਾਦਾ ਵਿਗਿਆਨ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਪੜਪੋਤੀ ਸੁਪਰੀਨਾ ਕੌਰ ਦਾ ਲਾਲਣ-ਪਾਲਣ ਇੱਕੋ ਸਮੇਂ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਸੁਪਰੀਨਾ, 22ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੀ ਕੁੜੀ ਹੋਣ ਦੇ ਨਾਤੇ, ਉਸ ਸਦੀ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਤੇਜ਼-ਤਰਾਰ ਅਤੇ 20ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਮੁੱਲਾਂ ਤੇ ਨੈਤਿਕਤਾਵਾਂ ਨੂੰ ਮਜ਼ਾਕ ਸਮਝਣ ਵਾਲੀ ਹੈ, ਜਦਕਿ ਵਿਗਿਆਨ ਸਿੰਘ ਸਿੱਧੇ-ਸਾਧੇ, ਸ਼ਰਮੀਲੇ ਅਤੇ 20ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਮੁੱਲਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਰੱਖਣ ਵਾਲੇ ਵਿਅਕਤੀ ਹਨ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਪੜਦਾਦਾ ਅਤੇ ਪੜਪੋਤੀ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਸਰੀਰਕ ਸੰਬੰਧ ਦਰਸਾ ਕੇ ਲੇਖਕ ਇਹ ਸਪਸ਼ਟ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸਰੀਰ ਦੀ ਭੁੱਖ ਇੱਕ ਆਦਿਮ ਭੁੱਖ ਹੈ ਜੋ ਆਖ਼ਿਰਕਾਰ ਸਾਰੀਆਂ ਸਮਾਜਿਕ ਨੈਤਿਕਤਾਵਾਂ ਅਤੇ ਮੁੱਲਾਂ ਤੋਂ ਉਪਰ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਮੁੱਲਾਂ ਦੀ ਘੇਰਾਬੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਦਾ ਉਲੰਘਣ ਵੀ ਹੈ। ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ, 22ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਬਹਾਨੇ ਲੇਖਕ ਨੇ ਉਸ ਸਦੀ ਦੇ ਨਵੇਂ ਮੁੱਲਾਂ ਦੀ ਕਲਪਨਾ ਵੀ ਕੀਤੀ ਹੈ ਜਿੱਥੇ 20ਵੀਂ ਅਤੇ 21ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਮੂਲ (ਔਰਤ ਮਰਦ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿੱਚ) ਕਿਸੇ ਮਤਲਬ ਦੇ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਜਾਂਦੇ। ਜਦੋਂ ਵਿਗਿਆਨ ਸਿੰਘ ਰਿਸ਼ਤੇ ਦੀ ਦੁਹਾਈ ਦਿੰਦਿਆਂ ਸਰੀਰਕ ਸੰਬੰਧ ਤੋਂ ਇਨਕਾਰ ਕਰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਸੁਪਰੀਨਾ ਗੁੱਸੇ ਨਾਲ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ -

"ਤੁਸੀਂ ਕੀ ਸੋਚਦੇ ਹੋ, ਤੁਹਾਡੇ ਵਰਗੇ ਪੁਰਾਣਪੰਥੀ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਾਲੇ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਮੈਂ ਪਸੰਦ ਕਰਦੀ ਹਾਂ ? ਕਦੇ ਵੀ ਨਹੀਂ। ਇਹ ਸਭ ਤਾਂ ਮੈਂ ਕੇਵਲ ਇੱਕ ਥ੍ਰਿਲ ਲਈ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹਾਂ... ਮਨ ਦੀ ਥੋੜ੍ਹੀ ਜਿਹੀ ਤਸੱਲੀ ਲਈ ਕਿ ਮੈਂ 22ਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿੱਚ ਜਨਮ ਲੈਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਵੀ 20ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਇੱਕ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਭੋਗ ਲਿਆ ਹੈ।"

ਜਦੋਂ ਸੁਪਰੀਨਾ ਆਪਣੇ ਪੜਦਾਦਾ ਵਿਗਿਆਨ ਸਿੰਘ ਨਾਲ ਸਰੀਰਕ ਸੰਬੰਧ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਕਾਮਯਾਬ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਦੱਸਦੀ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਲਈ ਉਸ ਦੇ ਮਨ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਅਪਰਾਧ-ਬੋਧ ਨਹੀਂ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਸਭ ਕੁਝ ਉਸ ਦੇ 22ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਮੁੱਲਾਂ ਕਰਕੇ ਹੈ, ਜਦਕਿ ਵਿਗਿਆਨ ਸਿੰਘ ਤੇ ਅਪਰਾਧ-ਬੋਧ ਦਾ ਭਾਰ ਕਈ ਗੁਣਾ

ਵਧ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਵੀ ਲੇਖਕ ਔਰਤ ਮਰਦ ਸੰਬੰਧਾਂ ਵਿੱਚ ਕੁਦਰਤੀ ਨਿਯਮਾਂ ਨੂੰ ਇੱਕ ਵੱਖਰੇ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਤੋਂ ਸਮਰਥਨ ਦੇਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ 22ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੇ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦੀ ਕਲਪਨਾ ਵੀ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਅਗਲੀ ਕਹਾਣੀ **'ਨੈਂਸੀ ਡਾਰਲਿੰਗ'** ਦੀ ਵੀ ਗੱਲ ਕਰਨੀ ਉਚਿਤ ਰਹੇਗੀ, ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਇਕ ਖੁੱਲ੍ਹੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਾਲੀ ਕੁੜੀ ਸਰੀਰਕ ਆਨੰਦ ਬਾਰੇ ਉਪਰੋਕਤ ਪਾਤਰਾਂ ਵਾਂਗ ਹੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟਿਕੋਣ ਰੱਖਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਨਾਇਕਾ ਨੈਂਸੀ ਇਕ ਖੁੱਲ੍ਹੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਵਾਲੀ ਐਂਗਲੋ-ਇੰਡੀਅਨ ਕੁੜੀ ਹੈ ਜਦਕਿ ਉਸ ਦਾ ਪ੍ਰੇਮੀ ਇਕ ਆਮ ਪਰੰਪਰਾਵਾਦੀ ਸੋਚ ਵਾਲਾ ਵਿਅਕਤੀ ਹੈ ਜੋ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸਰੀਰਕ ਸੰਬੰਧ ਨੂੰ ਗਲਤ ਮੰਨਦਾ ਹੈ। ਨੈਂਸੀ ਦੇ ਵਿਚਾਰ ਸੁਪਰੀਨਾ ਤੋਂ ਘੱਟ ਵਿਦ੍ਰੋਹੀ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਨੈਂਸੀ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ -

"ਇਨਸਾਨ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਦੋ ਮੁੱਖ ਪਲ ਆਉਂਦੇ ਹਨ, ਜੀਤ। ਇਕ ਤਾਂ ਉਹ, ਜਦੋਂ ਉਹ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਚਾਹੁਣ ਲੱਗ ਪੈਂਦਾ ਹੈ, ਤੇ ਦੂਜਾ ਉਹ ਜਦੋਂ ਉਹ ਚਾਹਤ ਨੂੰ ਸਿਰਫ਼ ਇੱਕ ਭੁੱਖ ਤੋਂ ਵੱਧ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਮੰਨਦਾ ਅਤੇ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਨਵੇਂ-ਨਵੇਂ ਪਕਵਾਨ ਖਾਣੇ ਪਸੰਦ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਤੁਸੀਂ ਅਜੇ ਪਹਿਲੀ ਅਵਸਥਾ ਵਿੱਚ ਹੋ ਸ਼ਾਇਦ। ਤੁਸੀਂ ਮੇਰੀ ਅਵਸਥਾ ਤੱਕ ਤਾਂ ਪਹੁੰਚ ਸਕਦੇ ਹੋ, ਪਰ ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੀ ਅਵਸਥਾ ਤੱਕ ਮੁੜ ਨਹੀਂ ਪਰਤ ਸਕਦੀ।"

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ, ਇਹ ਕਹਾਣੀਆਂ ਸਿਰਫ਼ ਵਿਦ੍ਰੋਹ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਨੈਤਿਕਤਾ, ਸਮਾਜਿਕ ਘੇਰਾਬੰਦੀਆਂ ਅਤੇ ਕੁਦਰਤੀ ਇਨਸਾਨੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਅੰਤਰਵਿਰੋਧਾਂ ਦੀ ਗੰਭੀਰ ਪੜਤਾਲ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। **'ਕੈਨਵਾਸ ਕੋਰਾ ਨਹੀਂ'** ਦੀ ਸਰਲਾ ਇਕ ਅਮੀਰ ਪਿਤਾ ਦੀ ਇਕਲੌਤੀ ਧੀ ਹੈ। ਉਸਦਾ ਵਿਆਹੁਤਾ ਜੀਵਨ ਸੁਖਮਈ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਸ ਅਤ੍ਰਿਪਤੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਉਹ ਇਕ ਗਰੀਬ ਪਹਾੜੀ ਮਜ਼ਦੂਰ ਦੀ ਸਰੀਰਕ ਆਕਰਸ਼ਣ ਵੱਲ ਖਿੱਚੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ **'ਜਾਇਜ਼ ਨਾਜਾਇਜ਼'** ਕਹਾਣੀ ਦਾ ਸੀਟੂ ਆਪਣੇ ਮਾਮੇ ਦੀ ਧੀ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਕਰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਸੋਚਦਾ ਹੈ **'ਕਿੰਨਾ ਵਧੀਆ ਹੁੰਦਾ ਜੇ ਅਸੀਂ ਵੀ ਮੁਸਲਮਾਨ ਹੁੰਦੇ।'** ਇਨ੍ਹਾਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਰਾਹੀਂ ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਵਿਆਪਕ ਉਹਨਾਂ ਰੁਝਾਨਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਕਾਰਨ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਨੈਤਿਕ ਨਿਯਮਾਂ ਦੇ ਮੌਜੂਦ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਅਜਿਹੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਬਣ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਨੈਤਿਕ ਬੰਧਨਾਂ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਕਰਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਤੀਜੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਘਾਤਕ ਸਾਬਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਅਜਿਹੇ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿੱਚ ਅਕਸਰ ਇਸਤ੍ਰੀਆਂ ਦਾ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਹੁੰਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਚੁੱਪਚਾਪ ਸਹਿਣ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਦੂਜਾ ਨਤੀਜਾ ਸੰਘਠਿਤ ਫੈਸਲੇ ਰਾਹੀਂ ਹੱਤਿਆ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਤੀਜਾ ਨਤੀਜਾ ਆਤਮਹੱਤਿਆ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾਂ, ਅਜਿਹੇ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਅਕਤੀ ਕਈ ਕਿਸਮ ਦੇ ਬਿਗਾੜ ਦਾ ਵੀ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਨਤੀਜੇ ਇੰਨੇ ਭਿਆਨਕ ਹੋਣ ਤਾਂ ਉਹਨਾਂ ਨੈਤਿਕਤਾਵਾਂ 'ਤੇ ਸੋਚ-ਵਿਚਾਰ ਕਰਨ ਦੀ ਲੋੜ ਤਾਂ ਜ਼ਰੂਰ ਪੈਂਦੀ ਹੈ।

ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਦੋ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੀ ਇਕੱਠੀ ਚਰਚਾ ਕਰਨਾ ਉਚਿਤ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਔਰਤ ਅਤੇ ਮਰਦ ਸਿਰਫ਼ ਸੰਤਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਦੀ ਇੱਛਾ ਕਰਕੇ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਬਾਹਰਲੇ ਸੰਬੰਧ ਬਣਾ ਲੈਂਦੇ ਹਨ। ਅਜਿਹੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਨੈਤਿਕਤਾ ਅਤੇ ਹੀਣਤਾ ਇਕਠੇ ਮਿਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। **'ਟ੍ਰੈਜਡੀ ਕਵੀਨ'** ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਗਗਨ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਵੀ ਮਾਂ ਨਹੀਂ ਬਣ ਸਕਦੀ, ਇਸ ਲਈ ਉਹ ਆਪਣੇ ਨਾਲੋਂ ਕਾਫ਼ੀ ਛੋਟੀ ਉਮਰ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨ ਬਸਰ ਵੱਲ ਆਕਰਸ਼ਤ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਨਾਲ ਵਿਆਹ ਇਸ ਉਮੀਦ 'ਚ ਕੀਤਾ ਸੀ ਕਿ ਉਸਨੂੰ ਪਿਆਰ ਮਿਲੇਗਾ, ਪਰ ਪਿਆਰ ਨਹੀਂ ਮਿਲਿਆ। ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਖਾਲੀਪਣ ਨੂੰ ਉਹ ਇਕ ਬੱਚੇ ਨਾਲ ਪੂਰਾ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਲਈ ਉਹ ਬਹੁਤ ਬੇਬਸ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ **'ਢਲਾਨ'** ਕਹਾਣੀ ਦਾ ਫੌਜੀ ਅਫ਼ਸਰ ਇਸ ਗੱਲ ਨਾਲ ਅਸੰਤੁਸ਼ਟ ਹੈ ਕਿ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਚਾਰ ਸਾਲ ਬਾਅਦ ਵੀ ਉਹ ਬਾਪ ਨਹੀਂ ਬਣ ਸਕਿਆ, ਹਾਲਾਂਕਿ ਉਹਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਸੁਪਨਾ ਪਿਤਾ ਬਣਨਾ ਹੈ। ਉਹ ਇਕ ਗਰੀਬ ਪਹਾੜਨ ਔਰਤ ਲਾਜੋ ਨਾਲ ਇਸੀ ਉਦੇਸ਼ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸਦੇ ਜੀਵਨ-ਨਿਰਵਾਹ ਦੀ ਪੂਰੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਲੈ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ਲਾਜੋ ਦੀ ਇਕ ਛੋਟੀ ਜਿਹੀ ਧੀ ਚੰਦਾ ਵੀ ਉਸਦੇ ਨਾਲ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ ਜੋ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਮੇਹਰਬਾਨੀ ਨਾਲ ਦੂਰਲੇ ਬੋਰਡਿੰਗ ਸਕੂਲ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਲਾਜੋ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਰਬ ਤੋਂ ਘੱਟ ਨਹੀਂ ਮੰਨਦੀ ਜੋ ਉਸਦੇ ਨਾਲ ਇੰਨ੍ਹਾਂ ਪਿਆਰ ਕਰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸਦੀ ਧੀ ਨੂੰ ਵੀ ਆਪਣੀ ਧੀ ਵਾਂਗ ਪਾਲਦਾ ਹੈ। ਇਕ ਵਾਰੀ ਲਾਜੋ ਦੇ ਮਾਂ ਬਣਨ ਦੀ ਆਸ ਜੱਗਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਦਾ ਕੋਈ ਠਿਕਾਣਾ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ -

"ਲਾਜੋ, ਹੁਣ ਮੈਨੂੰ ਲੋਕ ਗਲਤ ਨਹੀਂ ਸਮਝਣਗੇ। ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੱਸਾਂਗਾ ਕਿ ਮੈਂ ਵੀ ਬਾਪ ਬਣਨ ਦੇ ਕਾਬਲ ਹਾਂ..."

ਪਰ ਤੀਜੇ ਹੀ ਮਹੀਨੇ ਲਾਜੋ ਦਾ ਗਰਭਪਾਤ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਸਾਹਿਬ ਫਿਰ ਤੋਂ ਪਿਤਾ ਬਣਨ ਤੋਂ ਵਾਂਝਾ ਰਹਿ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਲਾਜੋ ਦੇ ਪੈਰ ਹੇਠੋਂ ਜ਼ਮੀਨ ਖਿਸਕ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਜਦੋਂ ਉਹਦੀ ਧੀ ਚੰਦਾ ਬਹੁਤ ਛੋਟੀ ਉਮਰ 'ਚ ਮਾਂ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਮਰਨ ਤੋਂ ਥੋੜ੍ਹੀ ਪਹਿਲਾਂ ਦੱਸ ਦਿੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਉਸਦੇ ਬੱਚੇ ਦਾ ਪਿਓ ਕੌਣ ਹੈ। ਲਾਜੋ ਝਟਪਟ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਘ੍ਰਿਨਾ ਨਾਲ ਭਰ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਢਲਾਨ ਤੋਂ ਸੁੱਟ ਕੇ ਸਾਹਿਬ ਤੋਂ ਬਦਲਾ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸਨੂੰ ਫਿਰ ਤੋਂ ਬਾਪ ਬਣਨ ਦੇ ਸੁਖ ਤੋਂ ਵੰਚਿਤ ਕਰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਕਹਾਣੀ ਦੱਸਦੀ ਹੈ ਕਿ ਕਿਵੇਂ ਇਕ ਮਰਦ ਆਪਣੇ ਬਾਪ ਬਣਨ ਦੇ ਸੁਪਨੇ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਲਈ ਕਿਸੇ ਵੀ ਹੱਦ ਤੱਕ ਡਿੱਗਣ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਥੋਂ ਤੱਕ ਕਿ ਜਿਸ ਬੱਚੀ ਨੂੰ ਉਹ ਆਪਣੀ ਧੀ ਵਾਂਗ ਪਾਲ ਰਿਹਾ ਸੀ, ਉਸ ਨਾਲੋਂ ਵੀ ਪਿਤਾ ਬਣਨ ਦੀ ਇੱਛਾ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਔਰਤ ਮਰਦ ਸੰਬੰਧ ਦਾ ਇਕ

ਨਵਾਂ ਪੱਖ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ ਉਪਰੋਕਤ ਦੋਵਾਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਰਾਹੀਂ ਲੇਖਕ ਸਾਹਮਣੇ ਲਿਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਸੰਤਾਨ ਦਾ ਨਾ ਹੋਣਾ ਔਰਤ ਅਤੇ ਮਰਦ ਦੋਵਾਂ ਨੂੰ ਦੁਖੀ ਕਰਦਾ ਹੈ ਪਰ ਦੋਵਾਂ ਦੀ ਪੀੜ੍ਹਾ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਕਿਸਮ ਦੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਔਰਤ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦੀ ਸੁਨੇਪਣ ਨੂੰ ਭਰਨ ਲਈ ਬੱਚਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਜਦਕਿ ਮਰਦ ਉਸ ਰਾਹੀਂ ਆਪਣੀ ਮਰਦਾਨਗੀ ਨੂੰ ਸਿੱਧ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾਂ, ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਔਰਤ ਮਰਦ ਦੇ ਹੋਰ ਕਿਸਮ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਆਪਣੀ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਕ ਪਾਸੇ ਜਿੱਥੇ ਉਹ ਔਰਤ ਮਰਦ ਦੇ ਸੰਬੰਧਾਂ ਨੂੰ ਕੁਦਰਤੀ ਨਿਯਮਾਂ ਦੇ ਅਧੀਨ ਦੇਖਣ ਦਾ ਜ਼ੋਰ ਦਿੰਦੇ ਹਨ, ਉੱਥੇ ਹੀ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਪਰੰਪਰਾਗਤ ਨੈਤਿਕ ਨਿਯਮਾਂ ਦੀ ਵੀ ਪੂਰੀ ਹਮਾਇਤ ਕਰਦੇ ਹਨ। **'ਸਾਗਰ, ਸੁਨਾਮੀ ਅਤੇ ਸੋਫ਼ੀਆ'** ਵਿੱਚ ਇਕ ਪਤੀ ਇਸ ਗੱਲ ਤੋਂ ਬਹੁਤ ਤਨਾਓ ਵਿੱਚ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸਦੀ ਪਤਨੀ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਮਰਦ ਵੱਲ ਆਕਰਸ਼ਤ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਇਕ ਹੋਰ ਪਤੀ ਅਜਿਹਾ ਵੀ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੀ ਪਤਨੀ ਦੇ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਮਰਦ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਬਣਾ ਲੈਣ ਦੀ ਗੱਲ ਜਾਣ ਕੇ ਵੀ ਉਸਨੂੰ ਛੱਡਣਾ ਨਹੀਂ ਚਾਹੁੰਦਾ। ਪਰ ਪਤਨੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਸੰਬੰਧਾਂ ਕਾਰਨ ਦਿਲੋਂ ਅਪਰਾਧਬੋਧ ਨਾਲ ਭਰ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਤੋਂ ਤਲਾਕ ਲੈ ਲੈਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਕਹਾਣੀਕਾਰ ਇਹ ਦੱਸਣਾ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਹਰ ਸਰੀਰਕ ਸੰਬੰਧ ਦਾ ਮਤਲਬ ਪਿਆਰ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਸੋਫੀਆ ਕੈਪਟਨ ਨੂੰ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ -

"ਮੈਨੂੰ ਉਹ ਪ੍ਰੇਮੀ ਨਹੀਂ ਲੱਗਦੇ, ਤੂੰ ਕੀ ਸਮਝਦਾ ਏ, ਕਿ ਮੇਰੇ ਬੋਸ ਹਾਵਰਡ ਅਤੇ ਮੇਰੇ ਵਿਚਕਾਰ ਪਿਆਰ ਸੀ ? ਨਹੀਂ, ਸਿਰਫ਼ ਇੱਕ ਆਕਰਸ਼ਣ ਸੀ, ਅਨੁਕੂਲ ਹਾਲਾਤ ਸਨ ਅਤੇ ਕੁਝ ਨਿੱਜੀ ਪਲ। ਇਸੇ ਲਈ ਸਰੀਰਕ ਸੰਬੰਧ ਬਣ ਗਏ। ਇਹ ਪਿਆਰ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਪਿਆਰ ਤਾਂ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਨਾਲ ਕਰਦੀ ਸੀ, ਅੱਜ ਵੀ ਕਰਦੀ ਹਾਂ, ਇਸੀ ਲਈ ਉਹਦੀ ਬੇਵਫ਼ਾਈ ਕਰਕੇ ਉਸਦੇ ਨਾਲ ਰਹਿ ਨਹੀਂ ਸਕੀ।"

ਉਲੇਖਣਯੋਗ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਬਾਹਰਲੇ ਸੰਬੰਧ ਨੂੰ ਬੇਵਫ਼ਾਈ ਜਾਂ ਬੇਈਮਾਨੀ ਮੰਨਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਇੱਥੇ ਕੁਦਰਤੀ ਨਿਯਮਾਂ ਦੀ ਸੰਕਲਪਨਾ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਜ਼ਰਅੰਦਾਜ਼ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਜਦਕਿ **'ਅੱਗ'** ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਨਾਇਕਾ ਪ੍ਰਿਆ ਦੀ ਹਾਲਤ ਇਹ ਹੈ ਕਿ **"ਤਿੰਨੇ ਬੱਚੇ ਨਾਨੀ ਦੇ ਘਰ ਹਨ, ਪਤੀ ਦੁਬਈ ਵਿੱਚ ਹੈ ਅਤੇ ਮੈਂ ਤੀਰਥ ਯਾਤਰਾ ਦੇ ਭਾਣੇ ਇੱਥੇ ਮਨੀਸ਼ ਕੋਲ।"** ਅਤੇ ਅਜਿਹੀ ਸਥਿਤੀ 'ਚ ਵੀ ਪ੍ਰਿਆ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਲੱਗਦਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਨਾਲ ਬੇਵਫ਼ਾਈ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਜੇ ਇਸਦੀ ਪਿਛੋਕੜ ਵੇਖੀਏ ਤਾਂ ਪ੍ਰਿਆ ਦੇ ਪੱਖ ਨੂੰ ਸਮਝਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸਦੇ ਪਤੀ ਦਾ ਵੀ ਇਕ ਵਿਧਵਾ ਔਰਤ ਨਾਲ ਸਰੀਰਕ ਸੰਬੰਧ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਗੱਲ ਪ੍ਰਿਆ ਨੂੰ ਵੀ ਪਤਾ ਹੈ। ਹਾਲਾਂਕਿ ਪ੍ਰਿਆ ਦੀ ਇਸ ਨਿਡਰਤਾ ਦੇ ਪਿੱਛੇ ਉਸਦੇ ਪਤੀ ਦੀ ਕਰਤੂਤ ਨਹੀਂ, ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਪਤੀ ਤੋਂ ਨਾਰਾਜ਼ ਨਹੀਂ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਉਸਨੇ ਬਦਲੇ ਦੀ ਨੀਤਿ ਨਾਲ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਮਰਦ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਬਣਾਏ ਹਨ। ਪ੍ਰਿਆ ਦਾ ਜੀਵਨ ਦਰਸ਼ਨ ਹੀ ਉਸਨੂੰ ਅਜਿਹੇ ਸੰਬੰਧਾਂ ਵੱਲ ਮੋਹਿਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿੱਚ **'ਗਲੋਬਲ ਪਿੰਡ ਦੇ ਵਾਸੀ'** ਕਹਾਣੀ ਦਾ ਵੀ ਜ਼ਿਕਰ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਪਤੀ-ਪਤਨੀ ਦੋਵਾਂ ਦੇ ਹੋਰ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਹਨ ਪਰ ਫਿਰ ਵੀ ਉਹ ਇਕੱਠੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਦਾ ਆਦਰ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ **'ਪੱਤਰ-ਮਿੱਤਰ'** ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਪਤੀ ਕਈ ਕੁੜੀਆਂ ਨੂੰ ਚਿੱਠੀਆਂ ਲਿਖਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਰੋਮਾਂਸ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਪਤਨੀ ਇਹ ਸਮਝ ਕੇ ਚੁੱਪ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਪੱਤਰ ਨਾਲ ਕੀ ਆਉਂਦਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ? ਪਰ ਜਦੋਂ ਉਸਨੂੰ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸਦਾ ਪਤੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇਕ ਕੁੜੀ ਨੂੰ ਮਿਲ ਵੀ ਚੁੱਕਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਦੇ ਮਨ ਨੂੰ ਠੇਸ ਪਹੁੰਚਦੀ ਹੈ। ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਪਤਨੀ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੀ ਸੁਰੱਖਿਆ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਵੀ ਉਹਨਾਂ ਕੁੜੀਆਂ ਵੱਲੋਂ ਚਿੰਤਤ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਕ੍ਰਮ ਵਿੱਚ **'ਪੁਨਰ ਸਿਰਜਣਾ'** ਕਹਾਣੀ ਗੋਲਣਯੋਗ ਹੈ ਜਿਸ ਦੀ ਨਾਇਕਾ ਦੇਵੀ ਆਪਣੇ ਪਤੀ ਦੇ ਅਤਿਆਚਾਰਾਂ ਕਾਰਨ ਸਰੀਰਕ ਅਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਤੌਰ ਤੇ ਬਹੁਤ ਬੀਮਾਰ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਕ ਡਾਕਟਰ ਉਸਦੀ ਮਾਨਸਿਕ ਥੇਰੇਪੀ ਕਰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜੀਉਣ ਦੀ ਉਮੀਦ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਦੇਵੀ ਠੀਕ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਡਾਕਟਰ ਉਤੇ ਮੋਹਿਤ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਜੋ ਹੱਲ ਸੁਝਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਉਹ ਬਿਲਕੁਲ ਰਵਾਇਤੀ ਹੈ। ਇੱਥੇ ਕੁਦਰਤੀ ਨਿਯਮਾਂ ਦੀ ਗੱਲ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਨਫੀ ਹੈ। ਡਾਕਟਰ ਉਸਨੂੰ ਫਿਰ ਤੋਂ ਉਸੇ ਅਤਿਆਚਾਰੀ ਪਤੀ ਕੋਲ ਵਾਪਸ ਜਾਣ, ਉਸਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਬਦਲਣ ਦੀ ਸਲਾਹ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇੱਥੇ ਇਹ ਗੱਲ ਸਮਝ ਤੋਂ ਪਰੇ ਹੈ ਕਿ ਜੋ ਇਨਸਾਨ ਇੰਨ੍ਹਾਂ ਜ਼ਾਲਮ ਹੋਵੇ, ਉਹ ਸਿਰਫ਼ ਇਕਲਿਆਂ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਨਾਲ ਕਿਵੇਂ ਬਦਲ ਸਕਦਾ ਹੈ ? ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਲੇਖਕ ਦੀ ਵਿਰੋਧੀ ਸੋਚ ਚੌਂਕਾ ਦੇਂਦੀ ਹੈ। ਡਾਕਟਰ ਉਸਨੂੰ ਇਹ ਵੀ ਕਹਿ ਸਕਦਾ ਸੀ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪੈਰਾਂ 'ਤੇ ਖੜੀ ਹੋਵੇ, ਖ਼ੁਦ ਮੁਖ਼ਤਿਆਰ ਜੀਵਨ ਜੀਵੇ, ਬਜਾਏ ਇਕ ਅਮਾਨਵੀਆ ਅਤੇ ਨਿਰਦਈ ਪਤੀ ਕੋਲ ਵਾਪਿਸ ਪਰਤਨ ਦੇ।

ਹਾਲਾਂਕਿ, ਔਰਤ ਮਰਦ ਦੇ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦੀ ਜਟਿਲਤਾ ਸਿਰਫ਼ ਇਨ੍ਹਾਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਤੱਕ ਸੀਮਤ ਨਹੀਂ। ਇਸਦੇ ਕਈ ਪੱਖ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਹਰ ਪੱਖ ਨੂੰ ਦੇਖਣ ਦੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਨਜ਼ਰੀਏ ਅਤੇ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟਿਕੋਣ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ। **'ਮਹਾਨਤਾ'** ਨਾਂ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਨਾਇਕਾ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਨੂੰ ਇਸ ਕਰਕੇ ਛੱਡ ਦਿੰਦੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਉਸਨੂੰ ਇਹ ਸ਼ੱਕ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਨਾਮਰਦ ਹੈ। ਇਹ ਅੰਦਾਜ਼ਾ ਉਸਨੂੰ ਇਸ ਗੱਲ 'ਤੇ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਬਹੁਤ ਹੀ ਅੰਤਰੰਗ ਪਲਾਂ 'ਚ ਜਦੋਂ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਨੂੰ ਸੰਭੋਗ ਤੋਂ ਮਨਾ ਕਰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਆਸਾਨੀ ਨਾਲ ਮੰਨ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹੀ ਇਕ ਗੱਲ 'ਤੇ ਉਹ ਮੰਨ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਵਿੱਚ ਮਰਦਾਨਗੀ ਦੀ ਘਾਟ ਹੈ, ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਮਰਦ ਸਦਾ ਹੀ ਜਬਰਨ ਨਾਲ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸੋਚ ਕਿੰਨੀ ਵਿਆਪਕ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸਦੇ ਨਤੀਜੇ ਕਿੰਨੇ ਭਿਆਨਕ ਹੋ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਇਹ ਸੋਚਣ ਲਈ ਇਹ ਕਹਾਣੀ ਮਜਬੂਰ ਕਰਦੀ ਹੈ। **'ਅੰਤਰ'** ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਪਾਤਰ ਰਮਿਆ ਆਪਣੀ ਲਾਚਾਰੀ ਅਤੇ ਘਾਟ ਵਿੱਚ ਹੀ ਮਹਾਨ ਲੱਗਦੀ ਹੈ। ਉਹ ਗਰੀਬੀ ਤੋਂ ਤੰਗ ਆ ਕੇ ਇਸਾਈ ਧਰਮ

ਸਵੀਕਾਰ ਕਰ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਜੋ ਉਹਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਪਾਲਣ-ਪੋਸ਼ਣ ਹੋ ਸਕੇ। ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ, ਪਤੀ ਦੇ ਹੋਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਵੀ ਉਹ ਚਰਚ ਦੇ ਫਾਧਰ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਲਾਚਾਰ ਹੈ ਤਾਂ ਜੋ ਪਰਿਵਾਰ ਦੀ ਆਰਥਿਕ ਮਦਦ ਹੁੰਦੀ ਰਹੇ। ਰਮੀਆ ਪਹਿਲਾਂ ਇਕ ਅਮੀਰ ਘਰ ਦੀ ਨੂੰਹ ਸੀ, ਪਰ ਕਿਸੇ ਦੇ ਪਿਆਰ ਵਿੱਚ ਪੈ ਕੇ ਉਸ ਦੇ ਨਾਲ ਭੱਜ ਗਈ। ਹੁਣ ਜੀਵਨ ਗੁਜ਼ਾਰਨ ਲਈ ਉਸਨੂੰ ਕਿਸੇ ਹੋਰ ਦੇ ਨਾਲ ਸੌਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਵੀ ਔਰਤ ਮਰਦ ਸੰਬੰਧ ਦਾ ਇਕ ਹੋਰ ਪੱਖ ਹੈ ਜੋ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਆਮ ਹੈ। ਰਮੀਆ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ -

"ਜਦੋਂ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਪਹਿਲੇ ਮਰਦ ਦੇ ਨਾਲ ਸੀ ਨਾ, ਤਾਂ ਜਦੋਂ ਕਦੇ ਤੇਰੇ ਮਾਮੇ ਨਾਲ ਚੋਰੀ-ਛੁਪੇ ਕੁਝ ਕਰ ਲੈਂਦੀ ਸੀ, ਤਾਂ ਉਸ ਰਾਤ ਆਪਣੇ ਮਰਦ ਨਾਲ ਜ਼ਰੂਰ ਸੌਂਦੀ ਸੀ। ਡਰਦੀ ਸੀ ਕਿੱਥੇ ਕੁਝ ਹੋ ਗਿਆ ਤਾਂ ਫੜੀ ਨਾ ਜਾਵਾਂ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਮਰਦ ਨਾਲ ਤੁਹਾਡੇ ਮਾਮੇ ਕਰਕੇ ਸੌਣਾ ਪੈਂਦਾ ਸੀ। ਹੁਣ ਤੁਹਾਡੇ ਮਾਮੇ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਬੱਚਿਆਂ ਕਰਕੇ ਸੌਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਤੇਰੇ ਮਾਮੇ ਦੀ ਕਮਾਈ 'ਤੇ ਰਹਿ ਲੈਂਦੀ ਤਾਂ ਅੱਜ ਮੇਰੇ ਬੱਚੇ ਭਿਖਾਰੀ ਹੋ ਜਾਂਦੇ।"

ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਦੇਖਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇੱਕ ਔਰਤ ਕਦੇ ਸੁਖ ਲਈ ਮਰਦ ਦੇ ਨਾਲ ਸੌਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਕਦੇ ਆਪਣੇ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦੀਆਂ ਲੋੜਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਲਈ। ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦਾ ਪਾਲਣ-ਪੋਸ਼ਣ ਕਰਨ ਦੀ ਸਾਰਥਕਤਾ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਵੀ ਜਿਸਮਾਨੀ ਸੁਖ ਨਾਲੋਂ ਕਿਸੇ ਵੀ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਘੱਟ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਸੇ ਲਈ ਉਸ ਨੂੰ ਪਰਾਏ ਮਰਦ ਨਾਲ ਸੌਣਾ ਨਹੀਂ ਚੁਭਦਾ। **'ਅੱਗ'** ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਪ੍ਰਿਆ ਤਾਂ ਕਹਿੰਦੀ ਵੀ ਹੈ ਕਿ **"ਜੇਕਰ ਜਿਸਮਾਨੀ ਸੁਖ ਹੀ ਸਭ ਕੁਝ ਹੁੰਦਾ ਤਾਂ ਦੁਨੀਆ ਭਰ ਦੀਆਂ ਵੇਸ਼ਿਆਵਾਂ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਸੁਖੀ ਹੁੰਦੀਆਂ।"** ਮਜ਼ਬੂਰੀਆਂ ਮਰਦਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਨੈਤਿਕ ਮੁੱਲਾਂ ਤੋਂ ਡਿੱਗਣ ਲਈ ਮਜਬੂਰ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਔਰਤਾਂ ਨੂੰ ਵੀ। ਜਦੋਂ ਮਰਦ ਡਿੱਗ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਹ ਚੋਰੀ ਜਾਂ ਕਤਲ ਜਿਹੇ ਜਾਂ ਹੋਰ ਨੀਚ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਪਰ ਔਰਤ ਆਪਣੇ ਜਿਸਮ ਨੂੰ ਇੱਕ ਸਾਧਨ ਵਜੋਂ ਵਰਤਦੀ ਹੈ। ਕੁਝ ਔਰਤਾਂ ਆਪਣੇ ਸਰੀਰ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਚਤੁਰਾਈ ਨਾਲ ਵਰਤਦੀਆਂ ਹਨ, ਤਾਂ ਕੁਝ ਦੂਜਿਆਂ ਦੀ ਚਤੁਰਾਈ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਬਣ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। **'ਹਿਰੋਈਨ'** ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਸੋਨੀਆ ਆਪਣੀ ਅਦਾਕਾਰ ਬਣਨ ਦੀ ਇੱਛਾ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਸੌਂਦਰਯ ਰਾਹੀਂ ਪੂਰਾ ਕਰਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਆਪਣਾ ਸਰੀਰ ਨਹੀਂ ਵੇਚਦੀ। ਉਹ ਅਖੀਰ ਤੱਕ ਸਰੀਰ ਦਾ ਲਾਲਚ ਦੇਖਾ ਕੇ ਆਪਣਾ ਮਕਸਦ ਹਾਸਿਲ ਕਰ ਲੈਂਦੀ ਹੈ। ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ **'ਪ੍ਰਤਿਭਾ'** ਸਿਰਲੇਖ ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਚਲਾਉਣ ਲਈ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਮਰਦਾਂ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਦਾ ਨਾਟਕ ਤਾਂ ਕਰਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਵਿਆਹ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ ਕਿਉਂਕਿ ਵਿਆਹ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਹ ਪਰਿਵਾਰ ਪ੍ਰਤੀ ਆਪਣੀਆਂ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀਆਂ ਨਹੀਂ ਨਿਭਾ ਸਕਦੀ। **'ਪਹਾੜੀ ਨਾਲਾ'** ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਪੰਦਰਾਂ ਸਾਲਾਂ ਦੀ ਮਾਸੂਮ ਅਨਾਥ ਕੁੜੀ ਨੂੰ ਉਸ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰਾਂ ਨੇ ਕੇਵਲ ਪੰਜ ਹਜ਼ਾਰ ਰੁਪਏ ਵਿੱਚ ਵੇਚ ਦਿੱਤਾ ਅਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਜ਼ਬਰਦਸਤੀ ਵੇਸ਼ਯਾ ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ। ਉਸ ਦਾ ਕਿਸੇ ਮਰਦ ਨਾਲ ਬਣਾਇਆ ਗਿਆ ਸੰਬੰਧ ਨਾ ਤਾਂ ਕੁਦਰਤੀ ਮਾਇਨਿਆਂ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਸੰਬੰਧ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਸਮਾਜਿਕ ਜਾਂ ਨੈਤਿਕ ਅਰਥਾਂ ਵਿੱਚ। ਉਸ ਦੇ ਇਸ ਸੰਬੰਧ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਰੀ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾਂ ਹੋਰ ਕਿਹੜਾ ਨਾਂ ਦਿੱਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਲਈ ਕਿਹੋ ਜਿਹੀ ਧਾਰਣਾ ਬਣਾਈ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ, ਇਹ ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਵਿਚਾਰਨਯੋਗ ਹੈ।

ਹੁਣ ਆਖ਼ਿਰ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਕਹਾਣੀ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕਰਨਾ ਮੈਨੂੰ ਜ਼ਰੂਰੀ ਲੱਗਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਦਾ ਸਿਰਲੇਖ ਹੈ **'ਰੁੱਖ ਨਾਲੋਂ ਟੁੱਟਾ ਪੱਤਾ'** ਇਹ ਕਹਾਣੀ ਇੱਕ ਕਿੱਨਰ ਉੱਤੇ ਆਧਾਰਿਤ ਹੈ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣਾ ਕੇ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਕਹਾਣੀਆਂ ਲਿਖੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਕਿੱਨਰਾਂ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਅਕਸਰ ਹਾਸ-ਮਜ਼ਾਕ ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿੱਚ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮਨ ਵਿਚ ਝਾਤ ਪਾ ਕੇ ਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲਤਾ ਨਾਲ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਲਿਖਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਦੀ ਇਹ ਕਹਾਣੀ ਇਸ ਕਮੀ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਦੀ ਇੱਕ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਹੈ ਜਿਸ ਦਾ ਸਵਾਗਤ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਕਿੱਨਰ ਦੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਉਸਦਾ ਪਿਤਾ ਬਹੁਤ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਇੱਕ ਧੀ ਵਾਂਗ ਪਾਲਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਉਹ ਨੌਜਵਾਨ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਇੱਕ ਮੁੰਡੇ ਨਾਲ ਉਸ ਨੂੰ ਪਿਆਰ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਮੰਡਾ ਵੀ ਉਸ ਨਾਲ ਬੇਹੱਦ ਪਿਆਰ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉਸ ਨਾਲ ਵਿਆਹ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇੱਕ ਦਿਨ ਜਦੋਂ ਉਹ ਦੋਵੇਂ ਅੰਤਰੰਗ ਪਲਾਂ ਵਿੱਚ ਹੁੰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਮੁੰਡੇ ਨੂੰ ਉਸ ਦੇ ਕਿੱਨਰ ਹੋਣ ਦੀ ਸੱਚਾਈ ਪਤਾ ਲੱਗ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਤੁਰੰਤ ਹੀ ਉਸ ਦੀ ਆਪਣੀ ਪ੍ਰੇਮਿਕਾ ਨਾਲ ਦੂਰੀਂ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਆਪਣੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਨੂੰ ਖੋ ਦੇਣ ਦਾ ਉਸਨੂੰ ਵੀ ਗਹਿਰੀ ਪਛਤਾਵਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਫਿਰ ਇਹ ਗੱਲ ਚਾਰੇ ਪਾਸੇ ਫੈਲ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਪਿਤਾ ਦੇ ਬਹੁਤ ਵਿਰੋਧ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਕਿੱਨਰਾਂ ਦਾ ਟੋਲਾ ਉਸਨੂੰ ਲੈ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਉਸ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਅਚਾਨਕ ਹੀ ਨਰਕ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਹੱਦ ਤਾਂ ਉਦੋਂ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜਦੋਂ ਉਹ ਆਪਣੇ ਟੋਲੇ ਨਾਲ ਇੱਕ ਘਰ ਵਿੱਚ ਨੱਚਣ-ਗਾਉਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਜਿੱਥੇ ਪੁੱਤਰ ਜਨਮ ਦੀ ਖ਼ੁਸ਼ਖ਼ਬਰੀ ਮਿਲੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤੇ ਉਹ ਬੱਚਾ ਉਸ ਦਾ ਪੁਰਾਣਾ ਪ੍ਰੇਮੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਉਹ ਕਿੱਨਰ ਉਸ ਯੁਵਕ ਕੋਲੋਂ ਨੱਚ-ਗਾ ਕੇ ਭਿੱਖ ਮੰਗਣ ਲਈ ਮਜਬੂਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜੋ ਕਦੇ ਉਸ ਦਾ ਪ੍ਰੇਮੀ ਸੀ ਅਤੇ ਉਸ ਨਾਲ ਵਿਆਹ ਕਰਨਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਇਹ ਸੰਵੇਦਨਾ ਦੀ ਉੱਚੀ ਮਾਰ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ ਸਿਰਫ਼ ਦਿਲ ਤੇ ਮਹਿਸੂਸ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਕਥਾ ਦੇ ਅਨੁਕੂਲ ਅਤੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਸਧਾਰਨ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਰਚਨਾਤਮਕ ਢਾਂਚੇ ਵਿੱਚ ਵੀ ਅਣਚਾਹੀ ਜਟਿਲਤਾ ਨਹੀਂ ਲਿਆਉਂਦੇ। ਇਸ ਕਾਰਣ ਹੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਪੜ੍ਹਨਯੋਗ ਅਤੇ ਸਰਲ ਬਹਾਅ ਵਾਲੀਆਂ ਬਣ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਾ ਕਥਾ ਵਸਤੂ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਬਹੁਤ ਨੇੜੇ ਹੁੰਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਇਹ ਕਹਾਣੀਆਂ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਬਣ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਭਾਵੇਂ ਉਹ ਜੰਮੂ ਦੇ ਵਸਨੀਕ ਹਨ ਪਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਸਾਰਾ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ ਵਿਖਾਈ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਔਰਤ ਮਰਦ ਸੰਬੰਧਾਂ ਨੂੰ ਕੇਂਦਰ ਵਿੱਚ ਰੱਖ ਕੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣਾਂ ਤੋਂ ਸੋਚਣ ਵਾਲੇ ਕਹਾਣੀਕਾਰ

ਬਹੁਤ ਥੋੜ੍ਹੇ ਹਨ। ਇਸ ਨਜ਼ਰੀਏ ਨਾਲ, ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਇੱਕ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਅਤੇ ਵੱਖਰੀ ਰਚਨਾਤਮਕ ਅੰਦਾਜ਼ ਵਾਲੇ ਕਥਾਕਾਰ ਵਜੋਂ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਂਦੇ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜ਼ਰੂਰ ਪੜ੍ਹਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਚਰਨਜੀਤ ਸਿੰਘ

ਪੀਐਚ.ਡੀ ਖੋਜਾਰਥੀ

ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

ਜੰਮੂ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ

ਫੋਨ. ਨੰ 9596896963

English translation

Study of Man-Woman Relationships in Baljit Singh Raina's Stories

Baljit Singh Raina is an eminent storyteller in Punjabi and Hindi. His realm of experiences is quite vast. He has written stories on various subjects. However, some of his stories centered on man-woman relationships have become highly discussed and controversial due to their rebellious stance. In these stories, man-woman relationships are examined in the context of social morality and natural laws, and there is a fairly logical discussion on the relevance of social norms. These stories were written during the period of development of women's discourse in Hindi, which gives them special importance. Although it cannot be said that all his stories rebel against social norms, some stories even appear to stand in favor of the traditional morality of a male-dominated society. Therefore, it cannot be said that Baljit Singh Raina developed any specific viewpoint or philosophy and repeatedly echoed it in his narrative literature. The characters in his stories are drawn from society itself. Our society has resistance and contradictions, morality, and despite that morality, quite a bit of immorality exists, and all this is expressed very effectively in his stories. Baljit Singh Raina's stories bring forth such important and essential questions about man-woman relationships that are often overlooked even by the main and important female writers of women's discourse. For example, the following lines can be seen –

“The society that talks about sin and virtue, when will it understand that the union of man and woman is a social act later, but a natural act first. The social act was formed only when society's existence emerged. Something that depends more on nature than society, by confining it in social captivity, I do not think humanity has improved its race; rather, by doing so, it has turned its race into a puppet of mental and physical illnesses.”

(From the story “Fire”)

Baljit Singh Raina's title story ‘Fire’ is considered the most important among his stories centered on man-woman relationships. The heroine of this story, Priya, holds a very rebellious viewpoint regarding physical relationships. According to her, physical relationships between man and woman should be determined by nature, not society. Priya loves her cousin brother and also establishes physical relations with him. In this story, the author presents a long and thoughtful discussion on social morality in the context of man-woman relationships. He writes –

“Where are the moral values that are breaking, whose disintegration is happening? And the moral values that exist, are they truly moral values? If those values are bound in philosophical rules instead of natural laws, and following them is not within human control but within their natural instinct, can they be called moral values? Humans follow such values not easily, but forcefully. A force that is invisible, and if visible, it gets suffocated in the traditional cultural concepts of sin and virtue.”

In this story, the author wants to show that when man-woman relationships are forcibly confined within the rules of social morality, the individual becomes a victim of various unfulfilled desires, psychological disorders, and illnesses. Therefore, the author places natural relationships between man and woman above all social relationships and considers mutual consent as the most important morality. Where there is disagreement, there is immorality, sin. Priya clearly believes that whether a relationship is legitimate or not is decided by nature itself. If it were illegitimate, then naturally at that time, both should experience sexual incapacity, but that doesn't happen.

A noteworthy point in this story is that on one hand, the author talks about natural laws, and on the other, considers consent as the greatest morality. This consent is linked to a woman's self-respect. If not understood properly, the entire viewpoint can seem completely unreasonable. Along with this, sexual restraint (which social standards apply more to women) is also discussed. Due to this very restraint, how many women are killed or commit suicide every year. In fact, this is a thought-provoking question: what kind of morality is this under whose shadow human existence itself is endangered.

Connecting to this, the story titled ‘Roots’ can also be discussed, which is written in a science-fiction style. In this story, science creates a miracle where a person's grandfather and his daughter are both born at the same time in the 22nd century. The grandfather's birth miracle is possible due to the ‘Fertilized Embryo Bank for Future Generations’. Circumstances arise such that the great-grandfather Vigyan Singh and great-granddaughter Supreena Kaur are raised at the same time. Supreena, being a girl of the 22nd century, is fast-paced according to that century and considers the values and morals of the 20th century as a joke, while Vigyan Singh is straightforward, shy, and believes in 20th-century values. In this story too, by depicting physical relations between the great-grandfather and great-granddaughter, the author wants to clarify that the hunger of the body is a primal hunger that ultimately surpasses all social morals and values. If there is an encirclement of values in society, there is also violation of it. On the other hand, using the pretext of the 22nd century, the author has also imagined new values of that century where the roots (in the context of man-woman relationships) of the 20th and 21st centuries no longer hold meaning. When Vigyan Singh refuses physical relations citing the relationship, Supreena angrily says –

“What do you think, that I like a man with outdated thoughts like you? Never. I want to do all this just for a thrill... for a little mental satisfaction that even though born in the 22nd century, I have enjoyed a man from the 20th century.”

When Supreena succeeds in establishing physical relations with her great-grandfather Vigyan Singh, she says that she has no guilt in her mind for this, and all this is due to her 22nd-century values, while Vigyan Singh's burden of guilt multiplies. In this story too, the author attempts to support natural laws in man-woman relationships from a different perspective and also imagines relationships in the 22nd century.

Along with this, it would be appropriate to discuss the next story ‘Nancy Darling’, in which an open-minded girl holds a similar viewpoint on physical pleasure as the above characters. The heroine of this story, Nancy, is an open-minded Anglo-Indian girl, while her lover is an ordinary traditional-thinking person who considers physical relations before marriage wrong. Nancy's views are no less rebellious than Supreena's. Nancy says –

“There are two main phases in a person's life, Jeet. One is when they fall in love with someone, and the second is when they consider that love nothing more than a hunger and prefer to eat new dishes every day. You are probably still in the first phase. You can reach my phase, but I cannot return to yours.”

In this way, these stories not only rebel but also seriously examine morality, social constraints, and the contradictions of natural human life. In ‘Canvas is Not Blank’, Sarla is the only daughter of a rich father. Her married

life is not happy. Due to this dissatisfaction, she is drawn towards the physical attraction of a poor hill laborer. Similarly, in the story ‘Legitimate Illegitimate’, Situ loves his maternal uncle's daughter and thinks, ‘How great it would be if we were Muslims too.’ Through these stories, Baljit Singh Raina tries to understand those widespread trends in society due to which such relationships form despite the existence of moral rules. But due to moral constraints, their consequences prove very deadly. In such situations, women are often exploited and silently endure. The second outcome comes in the form of murder through organized decisions, and the third in the form of suicide. Besides this, in such situations, the individual also becomes a victim of various kinds of distortions. When the consequences are so horrific, there is certainly a need to reflect on those moralities.

After this, it is appropriate to discuss two stories together in which different women and men establish extramarital relationships solely for the desire to have children. In such stories, morality and inferiority mix together. In the story ‘Tragedy Queen’, Gagan cannot become a mother even after marriage, so she gets attracted to a young boy Basar who is much younger than her. She married her lover with the hope of getting love, but she didn't get love. She wants to fill the emptiness of her life with a child, for which she becomes very helpless. On the other hand, the military officer in the story ‘Slope’ is dissatisfied that even after four years of marriage, he has not become a father, although his biggest dream in life is to become a father. He establishes relations with a poor hill woman Lajo for this very purpose and takes full responsibility for her livelihood. Lajo's little daughter Chanda also lives with her, who studies in a distant boarding school due to Sahib's kindness. Lajo considers Sahib no less than God, who loves her so much and raises her daughter like his own. Once, hope arises for Lajo to become a mother, and Sahib's happiness knows no bounds –

“Lajo, now people won't misunderstand me. I will tell them that I too am capable of becoming a father...”

But in the third month itself, Lajo has a miscarriage, and Sahib is again deprived of becoming a father. The ground slips from under Lajo's feet when her daughter Chanda becomes a mother at a very young age and, just before dying, reveals who the father of her child is. Lajo suddenly fills with hatred towards Sahib and avenges him by throwing that child down the slope, depriving him again of the joy of becoming a father. This story shows how a man is ready to stoop to any level to fulfill his dream of becoming a father. To the extent that he even desires to become a father from the girl he was raising like his own daughter. This is a new aspect of man-woman relationships that the author brings forth through the above two stories. The absence of children pains both man and woman, but their pains are of different kinds. A woman wants a child to fill the emptiness of her life, while a man wants to prove his manhood through it.

Besides this, Baljit Singh Raina also makes other types of man-woman relationships the subject of his stories. On one hand, where he emphasizes viewing man-woman relationships under natural laws, on the other, he fully supports traditional moral rules. In ‘Ocean, Tsunami and Sophia’, a husband is very stressed because his wife gets attracted to another man. On the other hand, there is also a husband who, even after knowing about his wife's relationship with another man, does not want to leave her. But the wife, filled with guilt from those relationships, divorces her husband. In this story, the storyteller wants to convey that not every physical relationship means love. Sophia tells the captain –

“I don't consider them lovers, what do you think, that there was love between my boss Howard and me? No, it was just attraction, favorable circumstances, and some personal moments. That's why physical relations happened. This was not love. I loved my husband, I still do, that's why I couldn't stay with him after betraying him.”

It is noteworthy that in this story, extramarital relationships are considered betrayal or dishonesty, and here the concept of natural laws is completely ignored. Whereas the heroine Priya in the story ‘Fire’ is in a situation where “The three children are at grandma's house, husband is in Dubai, and I am here with Manish under the pretext of pilgrimage.” And even in such a situation, Priya doesn't feel she is betraying anyone. If we look at the background, Priya's stance can be understood that her husband also has physical relations with a widow, and Priya knows this. Although Priya's boldness is not due to her husband's actions, as she is not angry with her husband nor has she

established relations with another man out of revenge. It is Priya's life philosophy that draws her towards such relationships. In this context, the story ‘Inhabitants of the Global Village’ can also be mentioned, in which both husband and wife have relationships with others but still live together and respect each other. Similarly, in the story ‘Letter Friend’, the husband writes letters to several girls and romances them. The wife stays silent thinking what harm can letters do? But when she finds out that her husband has even met one of those girls, it hurts her mind. On the other hand, the wife also remains worried about her husband's safety from those girls. In this sequence, the story ‘Recreation’ is noteworthy, whose heroine Devi becomes very ill physically and mentally due to her husband's atrocities. A doctor provides her mental therapy and gives her hope to live. When Devi recovers, she becomes infatuated with the doctor. But the solution suggested in this story is completely traditional. Here, the talk of natural laws is completely negated. The doctor advises her to go back to the same tyrannical husband and change him with her love. Here, it is beyond understanding how a person who is so cruel can change with unilateral efforts? In this story, the author's contradictory thinking is startling. The doctor could have told her to stand on her own feet, live an independent life, instead of returning to an inhuman and merciless husband.

Although, the complexity of man-woman relationships is not limited to these stories. It has many aspects, and each aspect can have different perspectives and viewpoints. The heroine of the story titled ‘Greatness’ leaves her lover because she suspects he is impotent. She assumes this because in very intimate moments, when she refuses intercourse, he easily agrees. Based on this one thing, she concludes that he lacks manhood, otherwise a man always tries to obtain by force. This story forces one to think how widespread this thinking is and how horrific its consequences can be. The character Ramya in the story ‘Difference’ appears great in her helplessness and lack. She adopts Christianity out of poverty so that her children's education and upbringing can happen. On the other hand, despite having a husband, she is helpless to establish relations with the church father so that the family's financial help continues. Ramya was once the daughter-in-law of a rich house, but she eloped with someone after falling in love. Now, to sustain life, she has to sleep with someone else. This is another aspect of man-woman relationships that is common in society. Ramya says –

“When I was with my first man, whenever I secretly did something with your uncle, that night I would definitely sleep with my man. I was afraid that if something happened, I might get caught. In those days, I had to sleep with my man because of your uncle. Now I have to sleep with your uncle because of my children. If I lived on your uncle's earnings, my children would have become beggars today.”

In this story, it can be seen that a woman sometimes sleeps with a man for pleasure and sometimes to fulfill the needs of herself and her family. The sense of purpose in nurturing her family is no less than physical pleasure in any way. That's why sleeping with a stranger doesn't bother her. Priya in the story ‘Fire’ even says that “If physical pleasure was everything, then all the prostitutes in the world would be the happiest.” Compulsions force men to fall from moral values as well, and women too. When a man falls, he commits theft or murder or other lowly acts, but a woman uses her body as a tool. Some women use their bodies very cleverly, while others become victims of others' cleverness. In the story ‘Heroine’, Sonia fulfills her desire to become an actress through her beauty but does not sell her body. She achieves her goal by showing the temptation of her body until the end. On the other hand, Pratibha in the title story ‘Talent’ pretends to love various men to run her family but does not marry because after marriage, she cannot fulfill her responsibilities towards her family. The innocent orphan girl of fifteen in the story ‘Mountain Stream’ is sold by her relatives for only five thousand rupees and forcibly made into a prostitute. The relationship made with any man is neither a relationship in natural terms nor in social or moral senses. What name can be given to this relationship other than compulsion, and what concept can be formed for it, is truly worth pondering.

Now, finally, I feel it necessary to mention one story titled ‘Leaf Broken from the Tree’. This story is based on a eunuch, on which very few stories have been written. Eunuchs are often mentioned in the context of humor and mockery, and very little has been written sensitively by peeking into their minds. Baljit Singh Raina's this story is an attempt to fill this gap, which should be welcomed. This story talks about a eunuch whom her father raises with great love like a daughter. When she becomes young, she falls in love with a boy, and that boy also loves her

immensely and wants to marry her. One day, when they are in intimate moments, the boy discovers the truth of her being a eunuch, and immediately distances himself from his lover. He too deeply regrets losing his lover. Then this matter spreads everywhere, and despite the father's strong opposition, the group of eunuchs takes her away. Her life suddenly becomes hell. The limit is when she goes with her group to dance and sing in a house where there is news of a son's birth, and that child is her old lover's. Now, that eunuch is forced to beg by dancing and singing from the young man who was once her lover and wanted to marry her. This is the height of sensitivity that can only be felt in the heart.

The language of Baljit Singh Raina's stories is suitable to the narrative and very simple, and he does not bring unwanted complexity into the creative structure. That's why his stories become readable and have a smooth flow. The subject matter of his stories is very close to the lives of common people, which makes these stories effective. Although he is a resident of Jammu, his stories show the whole of India. There are very few storytellers who think from different perspectives keeping man-woman relationships at the center. From this viewpoint, Baljit Singh Raina emerges as an effective and distinct creative stylist storyteller, who must be read.

Ph.D. Researcher

***Charanjit Singh*.**

Punjabi Department,

Jammu University

Phone No. 9596896963